कार्यक्रम नीति 1:

मित्रता एवं पारस्परिक सहयोग का विकास

आपकी ज़िन्दगी में एक छोटे बच्चे का होना एक नितांत वैयक्तिक अनुभव हो सकता है - या फिर यह आपको दूसरों से जुडने का अवसर भी प्रदान कर सकता है। एक ओर यह सच है कि नए माता-पिताओं को अपने जीवन में अकस्मात परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है जिनके कारण उनके पास अब पहले जैसा खाली समय नहीं रह जाता, ऐसे बहुत से कार्यकलापों में अब वे भाग नहीं ले पाते जिनसे पहले वे आनन्द उठाया करते थे, और अब दोस्तों के साथ समय बिताना भी उनके लिए कठिन हो जाता है। वहीं दूसरी ओर, माता-पिता बनने के साथ ही नई मित्रताओं, नए सम्पर्कों के द्वार खुल जा सकते हैं। चूँकि मातृत्व या पितृत्व का अनुभव अत्यंत आह्लादमय हो सकता है, अत: नए माता-पिता अक्सर नए दोस्त बनाने के लिए समुत्सुक होते हैं - खास तौर पर वे माता-पिता जो समान अनुभवों से गुजर रहे होते हैं और जिनके बच्चे परस्पर सहचर बन सकते हों। आरंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम (early childhood programs) माता-पिताओं के लिए एक-दूसरे से मेल कराने वाले सूत्र बन सकते हैं। इस अध्ययन द्वारा ऐसे कई तरीकों का पता लगाया गया है जिनके माध्यम से कोई भी क्वालिटी प्रोग्राम प्रतिभागी माता-पिताओं के बीच एक सुदृढ सम्बंध के विकास में सहायक हो सकता है।

इस अध्ययन में, आरंभिक देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रमों के जरिये माता-पिताओं के समक्ष ऐसे अवसर उपस्थित किए जाते हैं जिनसे वे एक-दूसरे को जान सकें, आपसी सहयोग की प्रणाली विकसित कर सकें और नेतृत्व ग्रहण कर सकें। माता-पिताओं के लिए प्रस्तुत अनेक गतिविधियों में शामिल हैं: स्पोटर्स टीम, पॉटलाक्स, कक्षाएँ, कैम्पिंग तथा क्षेत्रों का दौरा, सलाहकार ग्रुप्स, बोर्ड लीडरशिप एवं स्वयंसेवा सम्बंधी अवसर। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चे के जीवन में भूमिका निभाने वाले सभी महत्वपूर्ण लोगों – जिनमें उनके पिता और विस्तारित परिवार के सभी सदस्य शामिल हैं – के पास एक सुखद और सहयोगपूर्ण संदेश संचारित होता है।

एकाकी एवं संवेदनशील परिवारों के लिए ये कार्यक्रम एक संयोजक एवं सेतु-निर्माता की भूमिका निभाते हैं और सम्पर्कों के निर्माण एवं सामाजिक सहयोग नेटवर्क के विकास में परिवारों को प्रोत्साहित करते हैं। अच्छे कार्यक्रम इन एकाकी परिवारों के साथ मिलकर उनके पक्ष में एक सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हुए उन्हें सामाजिक नेटवर्क एवं केंद्र पर उपलब्ध कार्यकलापों की ओर खींच लाते हैं। इस प्रकार उन परिवारों को सामाजिक गतिविधियों में शरीक होने का आमंत्रण देते हुए, तथा अन्य माता-पिताओं से सम्पर्क जोड़ने के कार्य में उनकी मदद करते हुए, वे "मैचमेकर" के रूप में अपना दायित्व अदा करते हैं। ये माता-पिता परस्पर अपने विचार साझा कर सकते हैं, समान गुणों वाले बच्चों में मेलजोल बढ़ा सकते हैं या जो एक मेंटर या परामर्शदाता बन सकते हैं। ये कार्यक्रम या तो स्वयं अथवा अन्य कार्यक्रमों के साथ साझेदारी के माध्यम से परिवार सहायता कार्यक्रम, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, सपोर्ट ग्रुप्स, या माता-पिताओं के लिए विशेषीकृत कक्षाएँ प्रस्तुत करते हैं ताकि परिवार नई सामाजिक कुशलताओं का विकास कर सकें और उन कारकों की खोज और उनका समाधान कर सकें जो उनके अलगाव का कारण रहे हैं।

एकाकी पालकों को किसी बाल्य कार्यक्रम का अत्यंत अनौपचारिक होना भी भयावह लग सकता है। उच्च क्वालिटी के कार्यक्रमों में सभी माता-पिताओं और बच्चों का समान रूप से स्वागत किया जाता है और उन कार्यक्रमों से सर्व-समावेश एवं समान सामाजिक मूल्य का महत्वपूर्ण संदेश संचारित होता है। यह संदेश उन नीतियों से और भी अधिक मजबूत होता है जिनके तहत परिवारों से कहा जाता है कि वे किसी कक्षा के सभी बच्चों को पारिवारिक पार्टी या सामाजिक गतिविधि में आमंत्रित करें। ऐसे कार्यक्रमों में काम करने वाले स्टाफ विद्वेष एवं वैमनस्य कम करने के इरादे से माता-पिताओं के बीच होने वाले टकरावों में हस्तक्षेप कर सकते हैं, ताकि छोटे-छोटे विवाद कटुता के कारण न बन जाएँ और सांस्कृतिक सद्भाव बना रहे।

खंड तीन

कार्यक्रम नीति 2:
सशक्त लालन-पालन

आरंभिक देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रम (early care and education programs) वे सहज स्थल हैं जहाँ माता-पिता, पालकों से सम्बंधित जानकारी एवं सहयोग पाने के लिए आ सकते हैं। माता-पिता जानते हैं कि यहाँ के स्टाफ उनके बच्चों की दिनभर निगरानी करते हैं, और इसलिए वे उनके सम्बंध में जो भी सवाल पूछेंगे उस संदर्भ में उन्हें जानकारी है। हर रोज शिक्षकों एवं कार्यक्रम के अन्य कर्मचारियों के साथ उनकी अभिक्रिया के कारण यह कार्यक्रम उनके लिए एक सुलभ स्थान बन जाता है जहाँ आकर वे अपने सवाल और सरोकार सामने रख सकते हैं। अंतत:, माता-पिता यह भी जानते हैं कि उनके बच्चों के विकास और ज्ञान संवर्द्धन के लिए शिक्षक हर रोज प्रयासरत हैं, और वे इन शिक्षकों को ज्ञान-सम्पन्न विशेषज्ञों के रूप में देखते हैं।

इस अध्ययन में, आदर्श कार्यक्रम वे हैं जो जरूरत पड़ने पर माता-पिताओं को लालन-पालन सम्बंधी मामलों में सहायता पा सकने के अनेक तरीके उपलब्ध कराते हैं —और इनके अंतर्गत कक्षाएँ, सहायता ग्रुप, शिक्षकों, परिवार सहायता ग्रुपों तथा अन्य कर्मचारियों से मिलने के अवसर, होम विजिट, किताबें देने वाले पुस्तकालय इत्यादि शामिल हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे यह सुनिश्चित करते हैं कि ये तमाम सूचनाएँ सहज और सरल तरीके से तथा माता-पिता को जब भी जरूरत हो, उपलब्ध कराई जाएँ। दूसरे शब्दों में, यह "सामयिक सहयोग" होना चाहिए। ऐसे माता-पिता जिनके बच्चों के अभी दाँत निकल रहे हों या वह कोई विशेष हरकत कर रहा हो, वे अपने बच्चों के शिक्षक से उसी दिन बात कर सकते हैं, न कि उन्हें छ: सप्ताह इंतजार करने की जरूरत है जबकि वह विषय माता-पिता के शैक्षणिक वर्ग अथवा अभिभावक-शिक्षक कॉन्फ्रेंस के समय चर्चा के लिए रखा जाएगा। "सामयिक सहयोग" से प्रोग्राम स्टाफ को भी यह मदद मिलती है कि वे बच्चों के दिन-प्रति-दिन के कक्षा सम्बंधी अनुभवों के आधार पर माता-पिता से लालन-पालन एवं बच्चों के विकास सम्बंधी मुद्दों पर बातचीत कर सकें। जल्दी लाने और ले जाने के क्षण "शिक्षण-योग्य अवसर" सिद्ध हो सकते हैं जबकि बच्चे के व्यवहार पर प्रकाश डाला जा सकता है और उसपर चर्चा की जा सकती है तथा बच्चों के लालन-पालन के बारे में सुझाव दिए जा सकते हैं। स्टाफ एवं शिक्षक माता-पिताओं के साथ नियमित रूप से मौखिक एवं लिखित दोनों ही प्रकार से सूचनाओं का विनिमय करते हैं। इसके लिए कई तरीके व्यवहार में लाए जाते हैं जिनसे वे बच्चों को सहज रूप से देख सकते हैं — जैसे दीवारों या दरवाजों में लगी खिड़कियाँ, वीडियो कैमरा रिकॉर्डिंग, या काँच के एकमार्गीय झरोखे जिनसे माता-पिता कक्षाओं में बैठे अपने बच्चों को झाँक सकते हैं। ऐसी तकनीकों के माध्यम से वे एक ऐसी जगह बना लेते हैं जहाँ कक्षा में बच्चों के पर्यवेक्षण के आधार पर माता-पिताओं को मार्गदर्शित करना स्टाफ सदस्यों के लिए ज्यादा सहज हो जाता है। इस अध्ययन के लिए प्रस्तुत फोकस ग्रुप में, माता-पिताओं और कर्मचारियों दोनों ने ही इस अवसर के महत्व का वर्णन इस रूप में किया जिसमें माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार को बेहतर समझ सकते हैं और ज्यादा प्रभावशाली ढंग से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं। माता-पिताओं को यह बात खास तौर पर पसंद आई जब स्टाफ ने यह "गौर करने" में उनकी मदद की कि किस प्रकार उनके "बच्चे अच्छे बन रहे हैं"। इस प्रकार के निर्देशित पर्यवेक्षण खास तौर पर ऐसे माता-पिताओं के लिए एक सशक्त अवसर प्रस्तुत करते हैं जो अपने बच्चों के व्यवहार को लेकर बहुत ही परेशान या तंग आ चुके हैं। दूसरों के नजरिये से अपने बच्चों को देखना तथा उनकी ताकत और क्षमता का आकलन करना उन्हें सुखद लगता है।

क्वालिटी प्रोग्राम पालकों को अनुशासन की भी शिक्षा देते हैं। हालाँकि सामान्यत: उनमें कोई ऐसा दिशा-निर्देश नहीं दिया जाता कि पालकों को अपने बच्चों को किस प्रकार अपने घरों पर अनुशासित रखना चाहिए परन्तु यह जरूर बताया जाता है कि मारना-पीटना और चिल्लाना केंद्र के माहौल के उपयुक्त नहीं है। उन कार्यक्रमों के जरिये पालकों को समझाया जाता है कि ये नीतियाँ क्यों तय की गई हैं तथा उन्हें अनुशासन बनाए रखने के अन्य वैकल्पिक तरीकों के बारे में बताया जाता है। साथ ही, माता-पिताओं को अनुशासन के बारे में लिखित सामग्रियाँ भी दी जाती हैं और उन विषयों पर अभिभावक कॉन्फ्रेंसों में चर्चा भी की जाती है।

और अंत में, इन कार्यक्रमों में बच्चों के पालन-पोषण सम्बंधी शिक्षा तथा ऐसे परिवारों को मदद देने पर खास ध्यान दिया जाता है जिनमें पल रहे बच्चों की जरूरतें विशिष्ट प्रकार की हैं। कर्मचारी उस तनाव से भली-भाँति अवगत हैं जिससे किसी भी माता-पिता को अपने बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं की आरंभिक पहचान के दौर में गुजरना पड़ता है। ऐसी जरूरत के वक्त वे परिवारों की मदद के लिए पहुँचते हैं और उन्हें न केवल बच्चों के प्रभावी पालन-पोषण के बारे में सहायक जानकारी देते हैं बल्कि अपराध-बोध, क्रोध, अस्वीकृति एवं अन्य भावनात्मक मुद्दों से निपटने में भी सहायता प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे खास जरूरतों वाले बच्चों के माता-पिताओं का सम्पर्क लालन-पालन से जुड़े संसाधनों, जैसे कक्षाओं, सहायता ग्रुपों, विशेषज्ञों और बच्चों की विशिष्ट दशाओं से सम्बंधित जानकारियों से जोड़ते हैं।

खंड तीन

कार्यक्रम नीति 3:

पारिवारिक संकटों के दौर में प्रतिक्रिया

शिक्षकों और माता-पिताओं के बीच रोजमर्रा के सम्पर्क के अलावा, इस अध्ययन के आदर्श कार्यक्रम परिवारों को उनकी बीमारी, नौकरी चले जाने, मादक द्रव्यों की लत, आर्थिक समस्याओं एवं ऐसी ही अन्य संकटापन्न स्थितियों में परिवारों को अतिरिक्त मदद मुहैय्या कराते हैं। स्टाफ के सदस्य परिवार के जरूरतमंद सदस्यों से बातचीत करने के लिए उपलब्ध रहते हैं और कुछ छोटे किस्म के कार्यक्रमों में डायरेक्टर खुले द्वार की नीति अपनाते हैं ताकि कोई भी जरूरतमंद सहायता के लिए आ सके। ज्यादा बड़े और जटिल कार्यक्रमों के तहत परिवार सहायता कार्यकर्ता उपलब्ध रहते है जो जरूरत के समय परिवारों को सहायता पहुँचाते हैं। एक ऐसा भी कार्यक्रम है जिसमें अभिभावक और स्टाफ दोनों ही को मालूम है कि वे किसी भी समस्या के लिए मनोस्वास्थ्य सलाहकार "डॉ. माइक" के पास जा सकते हैं। इन सभी कार्यक्रमों में माता-पिता यह जानते हैं कि उनके पास चाहे जो भी समस्या हो, वे सही समय पर, सहानुभूतिपरक एवं गोपनीयतापूर्ण सहायता के लिए किसी स्टाफ के पास जा सकते हैं।

इन आदर्श कार्यक्रमों में स्टाफ समुदाय के संसाधनों से अवगत रहते हैं और परिवारों को उनकी जरूरत के हिसाब से इन सेवाओं तक पहुँच बनाने में मदद देने के लिए उपलब्ध रहते हैं। वे समुदाय के अन्य सेवा-प्रदाताओं के साथ सहयोगात्मक सम्बंध का निर्वाह करते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर वे उन्हें ऐसी एजेंसियों की ओर निर्देशित या रेफर कर सकें जिन्हें वे जानते हैं और जिनपर उन्हें भरोसा है। जब कभी भी ये सेवा-प्रदाता माता-पिताओं को अन्य सेवाओं की ओर रेफर करते हैं तो ये स्टाफ के सदस्य उनके साथ फॉलो-अप करते हैं कि सुझाई गई सेवा उन्हें प्राप्त हो भी रही है या नहीं और, यदि नहीं, तो वे उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए अपनी सहायता जारी रखते हैं। रेफरल के अलावा, वे संकटों के समाधान के क्रम में परिवारों की सहायता के लिए आंतरिक संसाधन भी तैयार करते हैं। उदाहरण के लिए, एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें कक्षा की तस्वीरों को बेचकर प्राप्त हुए धन से माता-पिता के लिए एक आकस्मिक निधि बनाई गई है। एक अन्य कार्यक्रम में, किसी फाउंडेशन द्वारा समर्थित कोष उपलब्ध है और माता-पिता आकस्मिक वित्तीय सहायता के लिए आवेदन दे सकते हैं। इससे भी आगे, कई अन्य कार्यक्रम वे हैं जो परिवार में किसी की मृत्यु होने, आग लगने या ऐसे ही अन्य संकटों के समय सबको एक-दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं।

कब कौन-सा परिवार संकट में है, यह जानने के लिए सारे स्टाफ मिलजुल कर काम करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि मुसीबत की उस घड़ी में वह परिवार डूब न जाए। नियमित बैठकें आयोजित करके वे एक-दूसरे के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और कक्षा की सूचियों की समीक्षा करते हैं कि कहीं कोई 'लाल निशान' तो नहीं लगा है जो इस बात को इंगित करता हो कि कोई खास बच्चा, कोई खास परिवार, संकट में है। यदि कोई बिना कारण बताए अनुपस्थित हो, शुल्क न चुका पाया हो, या माता-पिता या बच्चे में तनाव के लक्षण उभरने जैसी बातों पर वे निगरानी रखते हैं और सम्बंधित परिवार तक जा पहुँचते हैं।

संकटग्रस्त परिवार के साथ कार्य करते हुए कोई भी कर्मचारी अकेला नहीं है। कुछ कार्यक्रमों में समस्याओं के निराकरण के लिए स्टाफ के सदस्य अपनी एक टीम बना लेते हैं और पालकों से मिलते हैं अथवा संकट-समाधान हेतु योजना बनाते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले सभी कार्य क्रमों में, कर्मचारियों को मालूम है कि प्रभावी समाधान किस प्रकार किया जाए – तथा नई जानकारियों, विचारों और सहायता हेतु वे अपने सुपरवाइजरों और सहकर्मियों के पास भी जा सकते हैं। परिवारों को निर्देशित करने के लिए सामुदायिक सेवाओं और संगठनों के बारे में उन्हें अद्यतन सूचना उपलब्ध रहती है। और सब यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि वे परिवारों के लिए अपने कार्य-दायित्व के दायरे से भी आगे बढ़कर प्रयास करने के लिए "उपलब्ध हैं"।

मुसीबत के वक्त मदद मुहैय्या कराना एक ऐसा काम है जिसका कर्मचारियों पर गहन भावनात्मक असर पड़ता है। आदर्श कार्यक्रम वह है जो इस तथ्य को स्वीकार करता है कि यदि स्वयं कर्मचारियों के भावनात्मक मुद्दों के समाधान में उनकी सहायता नहीं की जाएगी तो वे भी पालकों के लिए सहायतापरक भावनात्मक माहौल कायम करने में असमर्थ रहेंगे। अत: ऐसे कार्यक्रम कर्मचारियों को उत्प्रेरित करते हैं कि जरूरत पड़ने पर वे खुद अपनी देखभाल के लिए अवकाश निकालें और भावनात्मक मुद्दों के निराकरण के लिए कर्मचारियों को भी वे तमाम संसाधन दिए जाते हैं जो कि माता-पिताओं को। इन संसाधनों में मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, तनाव घटाने के उपाय (जैसे स्पा पैकेज) और सहायता ग्रुप इत्यादि शामिल हैं।

खंड तीन

कार्यक्रम नीति 4:

परिवारों को सेवाओं व अवसरों से जोड़ना

आदर्श आरंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम इस विश्वास पर आधारित हैं कि किसी भी बच्चे का कल्याण उसके परिवार के कल्याण में निहित है। इन कार्यक्रमों द्वारा किए जाने वाले कार्यों का एक महत्वपूर्ण पहलू है सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं रोजगार-प्राप्ति जैसे लक्ष्यों को

हासिल करने में मदद देने के लिए परिवारों के साथ मिलजुल कर कार्य करना। चूँकि आरंभिक देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रम वे स्थल हैं जहाँ माता-पिता नियमित रूप से जाया-आया करते हैं, अत: इन कार्यक्रमों में कार्यरत स्टाफ सेवाओं की पहचान करने और उनतक अपनी पहुँच कायम करने में परिवारों की मदद कर सकने में अत्यंत सक्षम हैं।

इस अध्ययन में लिए गए सारे कार्यक्रम परिवार को मजबूत बनाने वाली सेवाओं – जैसे: रोजगार प्रशिक्षण, शैक्षणिक अवसर, हेल्थकेयर एवं अन्य अत्यावश्यक सेवाओं – के साथ माता-पिता का सम्पर्क जोड़ पाने में कामयाब हुए। किसी वृहत्तर कार्यक्रम में कई छोटे-छोटे कार्यक्रम शामिल होते हैं, जैसे: बसति गृह, आर्थिक अवसर वाले कार्यक्रम, परिवार सहायता केंद्र, अथवा 'वन स्टॉप शॉप सेंटर' जहाँ एक ही जगह बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध हुआ करती हैं। अन्य कई कार्यक्रमों में कभी-कभार अन्य सेवा-प्रदाताओं को भी आमंत्रित किया जाता है, जैसे: टीकाकरण, स्क्रीनिंग या शिक्षा सम्बंधी अन्य सेवाओं के लिए। इस प्रकार की सुगमता से माता-पिता लाभान्वित होते हैं और वे उन सेवाओं से भी जुड़ पाते हैं जिनके बारे में शायद वे अन्यथा नहीं जान पाते या जिनका वे लाभ नहीं उठा पाते। मनोस्वास्थ्य परामर्श जैसी सेवाओं से माता-पिताओं का सम्पर्क जोड़ने से भी उन्हें उन बदनामियों से निबटने में सहायता दी जाती है जिनके कारण शायद वे इन सेवाओं तक नहीं पहुँच पाते।

इन कार्यक्रमों के जरिये इन सेवा-सूत्रों की संरचना चाहे जैसे भी तय की जाती हो, यह प्रयास पूरे विवेकपूर्वक किया जाता है कि परिवारों के मकसद और उनकी जरूरतों को समझा जाए और उन समुचित सेवाओं और सहयोग-केंद्रों से उनका सम्पर्क जोड़ा जाए जो इन मकसदों और जरूरतों को पूरा कर पाने में उनके लिए मददगार सिद्ध हो सकें। जब बच्चों को केंद्र में दाखिल किया जाता है तो बहुत से कार्यक्रम परिवारों के साथ एक औपचारिक अभिग्रहण एवं आकलन प्रक्रिया का इस्तेमाल करते हैं जिसके माध्यम से स्टाफ इन परिवारों को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए योजना बनाने में मदद देते हैं। उसके बाद उस योजना को कार्य रूप देने के लिए स्टाफ सालभर उस अभिभावक के साथ मिलकर कार्य करते हैं। यह काम छोटे-छोटे कार्यक्रमों द्वारा बहुत ही अनौपचारिक रूप से सम्पन्न किया जाता है जिसमें परिवार की योजनाओं और सेवा रेफरल का विकास अभिभावक के साथ स्टाफ की दैनिक चर्चा पर आधरित हुआ करता है।

कार्यक्रम नीति 5:

बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का सहजीकरण

बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का संवर्द्धन चिर काल से ही आरंभिक देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रम का मूल बिंदु माना जाता आ रहा है। इस अध्ययन में के कई कार्यक्रमों ने "दूसरे चरण" का उपयोग किया। "मैं समस्या सुलझा सकूँ" या अन्य पाठ्यक्रमों में इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया कि बच्चों को अपनी भावाभिव्यक्ति करने और दूसरों के साथ घुलने-मिलने में सहायता दी जाए। वह बात जिसपर ज्यादा गौर नहीं किया गया, यह है कि बच्चों के साथ किए गए सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के कार्य किस प्रकार खुद माता-पिताओं और उनके तथा उनके बच्चों के बीच के सम्बंध को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन में शामिल फोकस गुपों में माता-पिताओं से पूछा गया था: 'इस कार्यक्रम में आपके बच्चे/बच्ची की भागीदारी ने आपके ऊपर या आपके पालन-पोषण के ढंग पर किस प्रकार प्रभाव डाला?" अत्यंत सामान्य प्राथमिक प्रतिक्रियाओं में से एक यह थी कि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करने में बच्चे/बच्ची की क्षमता – अर्थात वह कुशलता जिसका प्रशिक्षण सामान्यत: सामाजिक-भावनात्मक विकास पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाता है - ने उस बच्चे/बच्ची के प्रति उनके (माता-पिताओं के) नज़रिये को ही बदलकर रख दिया था। अब वे माता-पिता अपने बच्चों को एक स्व-निर्भर व्यक्ति के रूप में देखने लगे थे जिनकी अपने एहसास, अपनी जरूरतें, अपने अधिकार थे।

वहुत सारे आरंभिक देखभाल एवं शिक्षा कार्यक्रमों में कक्षा के अंतर्गत विशिष्ट सामाजिक-भावनात्मक कुशलताओं की सीख दी जाती है – जैसे साझेदारी, सहयोग और बारी-बारी से सबको अवसर देने की – जिनसे माता-पिताओं के दायित्व सरल और घर का माहौल तनावरहित हो जाता है। भले ही सामाजिक-भावनात्मक विकास पाठ्यक्रम में बच्चों के समुचित पालन-पोषण के बारे में सिखलाने का तत्व मौजूद हो या न हो, यह असर तब भी पड़ता है। कुछ कार्यक्रम बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास कार्य के साथ-साथ "Magic 1, 2, 3" जैसे पैरेंटिंग शिक्षा पाठ्यक्रम चलाकर माता-पिताओं को नई अनुशासनात्मक कुशलताओं का विकास कर पाने में मदद देते हैं। इस अध्ययन में पता चला कि माता-पिताओं ने अपने इस नए अर्जित ज्ञान को मूल्यवान समझा और इन तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रवृत्त हुए। साथ ही इन तकनीकों से अपने बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार से निपटने में भी व्यापक तरीके ज्ञात हुए।

खास तौर पर चुनौतीपूर्ण व्यवहार वाले बच्चों के माता-पिताओं के लिए, सामाजिक-भावनात्मक विकास कार्यक्रम के स्टाफ अतिरिक्त सहयोग प्रदान किया करते हैं। माता-पिता स्टाफ के साथ अपने बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार के बारे में चर्चा कर सकते हैं, कक्षा में उन बच्चों के संदर्भ में जो रणनीति अपनाई जा रही है उससे सीख-समझ सकते हैं और बच्चों के व्यवहार को बच्चों के सामाजिक-आर्थिक विकास की वृहत्तर पृष्ठभूमि में स्थापित करके देख सकते हैं। इस अध्ययन में शामिल आदर्श कार्यक्रमों में, अपने बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार के अधिक प्रभावी एवं प्रेमपूर्ण निराकरण में माता-पिता की सहायता करने के लिए, प्रत्यक्ष अथवा रेफरल सेवाओं के माध्यम से, स्टाफ 'वैयक्तिक सहायता' प्रदान करते हैं। वे माता-पिताओं के मन में यह संदेश भरते हैं कि उनके बच्चे प्यारे बच्चे हैं जिनसे सब प्यार करते हैं और इस प्रकार वे माता-पिताओं को "अपने बच्चों को प्यारे बनते हुए देखने" में मददगार सिद्ध होते हैं।

कई कार्यक्रमों में औपचारिक सामाजिक-भावनात्मक विकास पाठ्यक्रम का उपयोग करने के अतिरिक्त, बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक अभिव्यक्तिशीलता के विकास के लिए कला सम्बंधी कार्यकलापों का भी इस्तेमाल किया जाता है। ये कार्यक्रम पालकों को अपने बच्चों के करीब आने और उनके सामाजिक-भावनात्मक विकास के बारे में विचार करने के लिए आमंत्रित करने में एक सेतु की भूमिका निभाते हैं। इस अध्ययन में शामिल एक कार्यक्रम ऐसा है जो माता-पिता और बच्चों दोनों ही के लिए कला-चिकित्सा कक्षाओं के आयोजन हेतु एक स्थानीय मनोचिकित्सक की सेवाएँ हासिल करता है। कला एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चे वाकई अपने जीवन की कठिनाइयों का चित्रण कर सकते हैं और उनकी प्रस्तुतियाँ अक्सर स्टाफ को माता-पिताओं के साथ उन बच्चों के सवालों और सरोकारों पर विचार-विमर्श करने के लिए आमंत्रित कर सकती हैं। एक अन्य कार्यक्रम हर महीने बच्चों के कार्य-प्रदर्शनों को प्रायोजित करता है जिनसे उन कार्यक्रमों में माता-पिता की भागीदारी का विकास होता है और इस प्रकार बच्चों और पालकों की पारस्परिक गतिविधियों का मार्ग प्रशस्त होता है।

चूँकि बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के संदर्भ में अक्सर अलग-अलग परिवारों की अलग-अलग अपेक्षाएँ हुआ करती हैं, अत: इन कार्यक्रमों के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है कि सारे सामाजिक एवं भावनात्मक विकास कार्यक्रम पारिवारिक संस्कृति के समरूप हों। माता या पिता से बच्चे के अलगाव की आवश्यकता या फिर स्वतंत्र विचार-शक्ति का महत्व – ये कुछ ऐसी अवधारणाएँ हैं जो महत्वपूर्ण सामाजिक घटक बन गए हैं। कार्यक्रमों के अंतर्गत माता-पिताओं के साथ बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास के बारे में विचार-विमर्श के अवसर उपस्थित किए जाते हैं ताकि घर और केंद्र पर किए जा रहे प्रयास परस्पर समानांतर और एक-दूसरे को बल प्रदान करने वाले सिद्ध हो सकें। इससे प्रोग्राम स्टाफ और अभिभावक दोनों को ही अपने अनुमानों और अपनी अपेक्षाओं

को परखने और दोनों ही पक्षों में विकास के महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करते हुए दोनों को एक संगम-बिंदु पर आकर मिलने की भी प्रेरणा मिलती है।

परिवारों का सशक्तीकरण - बच्चों का संरक्षण

कार्यक्रम नीति 6:

बच्चों की उपेक्षा और उनके शोषण के आरंभिक चेतावनी संकेतों की परख और उनका निराकरण

स्टाफ, बच्चों और माता-पिताओं के बीच रोजमर्रा की अभिक्रियाओं से प्रोग्राम स्टाफ के समक्ष चिंताजनक पहलुओं को तुरन्त पहचान सकने और हस्तक्षेप कर सकने का महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत होता है। इस अध्ययन में लिए गए आदर्श कार्यक्रम अनिवार्य रिपोर्टिंग पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय स्टाफ को इस बात का प्रशिक्षण और सहयोग देते हैं कि वे बच्चों का बारीकी से पर्यवेक्षण करें और किसी भी कठिनाई के आरंभिक लक्षणों के उभरने पर तुरन्त कार्य करें। इसके लिए वे जिन संकेतकों का प्रयोग करते हैं वे हैं अक्सर अनुपस्थित रहना, शुल्क जमा न होना, देरी से पिक-अप करना या माता-पिता में तनाव के लक्षण। ये ऐसे अवसर हैं जब वे सक्रियतापूर्वक परिवारों तक अपनी पहुँच कायम करते हैं और परिवार सहायता अथवा अन्य सेवाओं से उनका सम्पर्क स्थापित करते हैं। बहुत से कार्यक्रम बच्चों के स्वास्थ्य की दैनिक जाँच कराते हैं जिनके माध्यम से केवल शारीरिक दुरुपयोग के लक्षणों का ही खुलासा नहीं होता बल्कि उपेक्षा के और भी अधिक सूक्ष्म संकेतों को प्रकट करने में सहायक होते हैं। इस प्रकार जब मुद्दों की पहचान कर ली जाती है तो वे त्वरित प्रतिक्रिया करने और सहायता प्रदान करने में सक्षम होते हैं। स्टाफ ऐसे परिवारों से अपना सरोकार रखते हैं और उनकी किसी भी समस्या के समाधान में मदद पहुँचाने में सहायता की पेशकश कर सकते हैं।

जब स्टाफ उपेक्षा के संकेत देखते हैं तो वे माता-पिता के पास जाकर सक्रियतापूर्वक हस्तक्षेप करते हैं। वे उन्हें बाल शोषण और उपेक्षा के कानूनी पहलुओं के बारे में विस्तार से समझाते हैं, समुचित संसाधनों से सम्पर्क बनाने में उनकी मदद करते हैं, उनके बच्चों के विकास पर पड़ सकने वाले संभावित प्रभावों के बारे में बताते हैं और इस बात पर जोर देते हैं कि इस समस्या का समाधान होना ही चाहिए। पालकों को यह जताने के लिए कि यह मुद्दा उनके लिए अत्यंत गंभीर है और वे इसका समाधान चाहते हैं, वे इन माता-पिताओं के साथ निरंतर सम्पर्क बनाए रखते हैं और इस क्रम में वे सतत रूप से उनकी सहायता के लिए उपलब्ध रहते हैं। जो परिवार अपने बच्चों की उपेक्षा के जोखिम के कगार पर हैं, उनतक अपनी पहुँच कायम करने के लिए वे होम विजिट भी करते हैं।

जब स्टाफ की नजर में मामला कुछ और भी ज्यादा गंभीर हो जाता है तो वे नियम-कायदों का पालन करते हुए बाल शोषण या उपेक्षा की रिपोर्ट करते हैं ताकि सम्बंधित परिवार को सहायता पहुँचाई जा सके। इस अध्ययन में निहित अनेक कार्यक्रमों में माता-पिताओं ने अपनी व्यक्तिगत कहानियाँ सुनाई कि किस प्रकार इन कार्यक्रमों ने उन्हें उन परिस्थितियों को बदलने में सहायता पहुँचाई जो उनके बच्चों के लिए खतरनाक थीं। ये माता-पिता अभी भी इन कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी निभा रहे हैं, यह अपने आप में इस बात का प्रमाण है कि ये उपाय कितने कारगर हैं। बच्चों के शोषण और उनकी उपेक्षा के बारे में रिपोर्ट देने के माध्यम से एक दृढ सम्बंध का निर्वाह करना हमेशा आसान नहीं होता। फिर भी इन कार्यक्रमों में शामिल शिक्षक एवं स्टाफ आरंभ में शत्रुता भरे दृष्टिकोण का शिकार होते हुए भी सहयोगात्मक रुख बनाए रखते हैं। उनकी यह प्रबल इच्छा-शक्ति जो उन्हें शत्रुता-भाव रखने वाले माता-पिताओं के प्रति भी सहयोगात्मक रवैया बरकरार रखने के लिए उत्प्रेरित करती है, एक प्रमुख कारण है जिससे माता-पिता उन्हें एक सहायक संसाधन के रूप में देखने लग जाते हैं, न कि किसी पुलिसिया एजेंट के रूप में।

परिवारों का सशक्तीकरण - बच्चों का संरक्षण

कार्यक्रम नीति 7:

पालकों को मान्यता देना और सहायता करना

बाल शोषण एवं उपेक्षा की रोकथाम के लिए पालकों के साथ सकारात्मक सम्बंध का निर्वाह एक आधार है। अच्छी गुणवत्ता वाले आरंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में माता-पिताओं के साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया जाता है और उनके बच्चों की शिक्षा के मामले में उनके साथ साझेदारी की भावना बरती जाती है। निम्नांकित उपायों से स्टाफ पालकों को एक स्वागत भरे अनुभव से सम्पन्न बना देते हैं:

- हर अभिभावक के पास वैयक्तिक रूप से पहुँच कायम करना
- जरूरतमंद पालकों का अन्य सेवा-प्रदाता संस्थाओं से सम्पर्क जोड़ना
- बच्चों और कार्यक्रम के बारे में निर्णय लेने में पालकों को भागीदार बनाना
- कार्यक्रम के दायरे में पालकों के लिए समय और स्थान की गुंजाइश रखना

फोकस ग्रुपों में माता-पिताओं ने बार-बार इस बात का वर्णन किया कि यह बात उनके लिए कितनी महत्वपूर्ण थी कि जब वे कार्यक्रम में शामिल हुए तो उनसे मिलने वाले सभी लोग उनके स्वागत के लिए पलकें बिछाए मिले और उन्होंने उन्हें ऐसा महसूस कराया मानों वे समुदाय के एक महत्वपूर्ण अंग हों। बार-बार इन माता-पिताओं ने स्टाफ का वर्णन 'परिवार' के रूप में किया और कार्यक्रम को 'घर' कहकर पुकारा। बहुत-सी छोटी-छोटी भाव-भंगिमाओं को जब मिलाकर देखा जाता है तो उनसे एक ऐसा प्रोत्साहन भरा वातावरण बन जाता है जिसमें माता-पिता को यह लगने लगता है कि वे किसी भी समस्या या मुद्दे पर बात करने इन स्टाफ सदस्यों के पास आ सकते हैं। और जब ये माता-पिता कर्मचारियों से परिचित हो जाते हैं, उनपर विश्वास करने लग जाते हैं तो उनके समक्ष अपनी समस्याएँ प्रकट करने की उनकी संभावना और भी बढ़ जाती है, जैसेकि परेशानी या घरेलू हिंसा जैसी बातें, और वे उनकी सहायता पर निर्भर होने लगते हैं।

क्वालिटी प्रोग्राम ऐसे तरीके सृजित करते हैं जिनसे माता-पिता अपनी जगह पर घर-जैसा अनुभव करने लगते हैं और इस प्रकार यह संदेश संचारित होता है कि यह केवल बच्चों की जगह नहीं है बल्कि पूरे परिवार की। इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए इन कार्यक्रमों को पालकों के लिए विशिष्ट एवं नियमित कार्यकलाप आयोजित करने होते हैं, माता-पिता के लिए एक खास जगह बनानी पड़ती है, स्वयंसेवा के अवसर जुटाने होते हैं या कुछ नहीं तो कम से कम एक ऐसा वातावरण तैयार करना पड़ता है जिसमें माता-पिता स्वयं को एक सहज आरामदेह और स्वागत-भरे माहौल में पाते हैं, एक ऐसे माहौल में जहाँ बच्चों को लाते, ले जाते वक्त वे थोड़ी देर ठहरना चाहें। ये कार्यक्रम बच्चों के ज्ञान, अन्य माता-पिताओं तथा समुदाय के प्रति पालकों के योगदान के लिए स्पष्ट अवसरों की रचना करते हैं। इन कार्यक्रमों से यह पता चला कि जब पालकों के प्रयासों पर गौर किया जाता है, उन्हें मूल्यवान माना जाता है, उनकी सराहना की जाती है, उन्हें पुरस्कृत किया जाता है तो उन्हें यह लगता है कि वे इस कार्यक्रम के लिए मूल्यवान हैं। ये कार्यक्रम उन माता-पिताओं तक और भी सक्रिय रुख ग्रहण करते हुए अपनी पहुँच बनाते हैं जिन्हें प्रोत्साहन और सहायता की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। इसके लिए उन्हें स्वयंसेवा करने और बच्चों के कार्यकलापों में भागीदार बनने के अवसर दिए जाते हैं।

माता-पिता और स्टाफ के बीच के सम्बंध को मजबूत बनाने के लिए, जोकि पालकों से सम्पर्क जोड़ पाने हेतु कार्यक्रम की सफलता के लिए अत्यावश्यक है, आदर्श कार्यक्रमों में इस कार्यनीति को व्यवहार रूप देने की समझ विकसित कर रहे स्टाफ सदस्यों को सहायता और प्रशिक्षण देने और उनके कार्य की निगरानी करने पर कारगर रूप से ध्यान दिया जाता है। वे रोजमर्रा के कई कार्यकलापों की निगरानी के लिए पर्यवेक्षक (सुपरवाइजर) नियुक्त करते हैं और यह भी सुनिश्चित करते हैं कि स्टाफ और पालकों के लिए इन पर्यवेक्षकों तक अपनी पहुँच बनाना सुगम हो। अच्छे कार्यक्रम शिक्षकों को प्रोत्साहित करते हैं कि परिवारों के साथ अपने सम्बंध के क्रम में वे पहल भरे कार्य करें और जब कभी कोई चिंताजनक मसला सामने आए तो वे उसके समाधान के लिए तत्पर हो जाएँ – इस भरोसे के साथ कि इस कार्यक्रम के तहत उन्हें अपने साथियों और पर्यवेक्षक का समर्थन हासिल है। इन कार्यक्रमों में पुरुष स्टाफ भर्ती किए जाते हैं ताकि यह संदेश गुंजित किया जा सके कि बच्चों के जीवन में पुरुषों की एक मूल्यवान और अहम भूमिका है और वे उनकी स्नेहभरी देखभाल के एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। उनमें दुभाषिया सदस्यों को भी भर्ती किया जाता है और उन्हें भी जो परिवारों की सांस्कृतिक एवं प्रजातीय पृष्ठभूमियों को झलकाते हों ताकि परिवारों की सांस्कृतिक एवं प्रजातीय पृष्ठभूमि को सम्मान की नजर से देखा जाए।

जब माता-पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण के कार्य में जुटते हैं तो माता-पिताओं का ख्याल रखने और उनकी सहायता करने के लिए कार्यक्रम की प्रतिबद्धता उनके लिए एक आदर्श भूमिका बन जाती है – खास तौर पर उन माता-पिताओं के लिए जिनका बचपन में स्वयं ही सही पालन-पोषण न किया गया होगा। समुचित परवाह और देखभाल किए जाने से प्राप्त होने वाला अनुभव किसी भी सम्बंध में एक प्रमुख तत्व है और इससे उन माता-पिताओं को शोषण के इस चक्र को तोड़ने में सहायता मिलती है जिनका बचपन में खुद शोषण किया गया

होगा। इस प्रकार वे अपने बच्चों के साथ एक नई व्यवहार-पद्धति का विकास कर सकेंगे। अक्सर ये माता-पिता शोषण और उपेक्षा से जुड़े अनेक मुद्दों से जद्दो-ज़हद कर रहे होते हैं, जिनमें अल्कोहल या मादक द्रव्य का सेवन, घरेलू हिंसा या अवसाद जैसी बातें शामिल हो सकती हैं। हालाँकि आरंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रम के स्टाफ से यह उम्मीद तो नहीं की जा सकती कि वे हर व्यक्ति या परिवार को मनोचिकित्सा उपलब्ध कराएँ किन्तु वे इन परिवारों का सम्पर्क उन वांछित सेवाओं से जोड़ सकते हैं और वे ऐसे सहयोगात्मक और परवाहपूर्ण सम्बंधों की पेशकश कर सकते हैं जिनसे माता-पिता में लचीलेपन के गुण का विकास हो सके।